आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:23-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को गुप्त वेश में आये हुए भगवान को पहचान ने की, स्वयं को भी परखने की और सृष्टि के कालचक्र को भी समझने की दिव्य बुद्धि देकर, मनुष्य से देवता बनने का रास्ता बतलाने वाले, दिव्य बुद्धि दाता, ज्ञान सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप आया है तुम बच्चों को स्वच्छ बुद्धि बनाने, जब स्वच्छ बनो तब तुम देवता बन सकेंगे.

भक्ति मार्ग में हम ने परमात्मा को न जानने के कारण, अनजाने में बहुत बार परमात्मा की ग्लानि की हैं. लेकिन अब वही परमात्मा गुप्त वेश में आकर अपना कार्य कर रहे हैं. तो हम भाग्यशाली आत्माओं ने उसे पहचान कर, उसके बताये मार्ग पर चल रहे हैं और उसके कार्य में सहयोगी बनते हैं. यह एक बहुत बड़ी प्राप्ति है क्योंकि भगवान जब स्वयं इस धरा पर आते है तो उसको जानने वाले, मानने वाले और अपना बनाने वाले कोटों में कोई होते हैं. उनको ही परमात्मा अपना २१ जन्मो का स्वर्ग का वर्सा देते हैं.

बाबा की आज की मुरली से परमात्मा की सही पहचान कराने पर कहे गये कुछ महा-वाक्यों को हम फिर से पढ़ेंगे तो हमें दूसरों को भी समझाने में मदद मिलेगी जिसे हम अपना भाग्य ऊंच बना सके.

- बाप आकर बच्चों को समझाते है सब मनुष्य मुझे भगवान तो कहते हैं पर मुझे जानते कोई भी नहीं हैं. मनुष्य दुख में ही हे प्रभु, हे ईश्वर कह कर मुझे पुकारते हैं. परन्तु वन्डर है, एक भी मनुष्य मात्र बेहद के रचता बाप को जानते नहीं. मनुष्य मुझे न जानने कारण कह देते हैं भगवान सर्वव्यापी है, कच्छ-मच्छ में परमात्मा है. यह तो परमात्मा की ग्लानि करते हैं. इसलिए भगवानुवाच है - जब भारत में मनुष्य मेरी और देवी-देवताओं की ग्लानि करते-करते सीढ़ी उतरते तमोप्रधान बन जाते हैं, तब मैं आता हूँ.

- बाबा कहते हैं इस ड्रामा में मेरा भी पार्ट है. मुझे भी ड्रामा अनुसार सबको पतित से पावन बनाने आना ही पड़ता हैं. अगर मेरा पार्ट न हो तो नई दुनिया कैसे स्थापन होगी? बच्चों को रावण के दुखों से छुड़ाए नई दुनिया में कौन ले जायेगा? बाबा अभी बच्चों की तुच्छ बुद्धि से

स्वच्छ बुद्धि बनाते है जिसे वह मुझे पहचान सके, स्व को भी परख सके और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को भी जान सके.

- बाबा कहते हैं भक्ति मार्ग में ब्राह्मण जो कथा सुनाते है उसे तो कोई भी नर से नारायण बनता नहीं. अब यह है सच्चे बाप की सच्ची सत्य नारायण की कथा, जिसे तुम सचमुच में नर से नारायण बनते हो.

- बाबा कहते हैं भक्ति मार्ग में तो बच्चे गाते थे तुम मात-पिता...हे माता-पिता जब आप आते हैं तो हम आपसे सुख घनेरे लेते हैं, हम विश्व के मालिक बनते हैं. तो अभी बाबा तुम्हें विश्व का मालिक बनाते है, सो भी स्वर्ग के. जिसको तुमने आधा कल्प याद किया है - हे भगवान आओ, आप आयेंगे तो हम आपसे बहुत सुख पायेंगे. यह बेहद का बाप तो तुम्हें बेहद का वर्सा देते हैं, सो भी २१ जन्म के लिए.

- बाबा कहते हैं - मैं तुमको दैवी सम्प्रदाय बनाता हूँ, रावण तुम्हें आसुरी सम्प्रदाय बनाते हैं. मैं आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करता हूँ. वहाँ सतयुग में पवित्रता के कारण तुम्हारी आयु भी १५० वर्स तक बड़ी रहती है. यहाँ कलियुग में हैं भोगी मनुष्य तो अचानक मरते रहते हैं. यह नॉलेज तुम्हें स्वयं परमात्मा, बाप बैठकर देते हैं.

- बाबा कहते हैं तुम भक्ति में कहते थे - हे अंधों की लाठी प्रभु आओ, हमको शान्तिधाम-सुखधाम ले चलो. तो बाप ही आकर तुम्हें अभी शांतिधाम-सुखधाम का रास्ता बताते हैं. भक्ति में भगवान को न जानने के कारण मनुष्य भगवान पर झूठे इल्जाम लगा देते हैं. कोई मरता है तो भगवान को गाली देने लग पड़ते है. अब भगवान स्वयं तुम्हें समझाते है मैं किसी को मारता नहीं हूँ, मैं किसी को दुख कैसे दे सकता हूँ. मैं तो आता ही हूँ बच्चों को सुखधाम में ले जाने. बाप है ही सुख-दाता. बाप पतित-पावन आते हैं तो सारी दुनिया के मनुष्य मात्र तो क्या, प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाते हैं.

- बाबा कहते हैं भक्ति मार्ग में भक्तों ने पुरुषोत्तम मास आदि बैठ बनाये हैं. वास्तव में यह है पुरुषोत्तम युग, जबकि बाप स्वयं इस धरा पर आकर बच्चों को ऊंच ते ऊंच बनाते हैं. अभी तुम पुरुषोत्तम बन रहे हो.

- बाबा कहते हैं सारे विश्व में सिर्फ भारतवासी ही अपने धर्म को ही नहीं जानते हैं. बाबा कहते है भारतवासियों की बिरादरी तो बड़े ते बड़ी है जिससे और बिरादरियाँ निकलती हैं. भारतवासी असूल में आदि सनातन कौन-सा धर्म, कौन-सी बिरादरी थी- यह समझते नहीं हैं. अभी खुद रचयिता बाप तुम्हें बताते है कि सतयुग में थी आदि सनातन देवी-देवता धर्म वालों की बिरादरी थी, फिर सेकेण्ड नम्बर में चन्द्र वंशी बिरादरी थी, फिर द्वापर से इस्लामी, बौद्ध, क्रिश्चियन धर्म की बिरादरियाँ निकलती हैं. यह सारे झाड़ का राज एक परमात्मा बाप के सिवाय और कोई समझा न सके.

- बाबा कहते हैं अभी सब है माया-रावण का पॉम्प. इसका फॉल होना ही है कितनी जबरदस्त माया है. इस दुनिया में अभी साहूकारों के लिए स्वर्ग है, गरीब बिचारे नर्क में हैं. बाप है ही गरीब निवाज. तो अब नर्कवासीओं को बाप स्वर्गवासी बनाते हैं. गरीब ही आकर बाप से वर्सा लेते है, साहूकारों तो समझते है हम अभी ही स्वर्ग में हैं. अभी भारत भिखारी है, सतयुग में भारत ही कितना साहूकार था. एक ही आदि सनातन दैवी-देवता धर्म था.

ॐ शांति.